कार्बन डाईऑक्साइड से निजात पाने का उद्योग

जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापमान में वृद्धि काफी समय से चर्चा में है। खास तौर से धरती के बढ़ते तापमान के लिए ग्रीनहाउस गैसें ज़िम्मेदार हैं और इनमें प्रमुख गैस है कार्बन डाईऑक्साइड। कार्बन डाईऑक्साइड मूलतः जलने की क्रिया में बनती है और वायुमंडल में पहुंचती है। जिस पैमाने पर हम कोयला, पेट्रोल, डीज़ल जैसे जीवाश्म ईंधनों का उपयोग कर रहे हैं, उसी गति से वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही है।

वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा को नियंत्रण में रखने के कई सुझाव सामने आए हैं। इनमें से शायद सबसे तर्कसंगत व सरल उपाय तो यही है कि हम जीवाश्म ईंधनों के उपयोग में कमी करें। यदि वह न करना चाहें, तो एक सुझाव यह है कि आप रासायनिक क्रियाओं की मदद से कार्बन डाईऑक्साइड को वायुमंडल से हटाएं अथवा चट्टानों के अपरदन को तेज़ कर दें ताकि उसके दौरान होने वाली रासायनिक क्रियाओं में कार्बन डाईऑक्साइड सोखी जाए।

आप मानें या न मानें, मगर इन सभी सुझावों को काफी गंभीरता से लिया जा रहा है।

हाल ही में यूके के ब्रुनेल विश्वविद्यालय के कोलिन एक्सॉन और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एलेक्स लुबेंस्की ने यह अनुमान लगाने का प्रयास किया है कि हम प्रति वर्ष जो 30 गिगाटन कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जित करते हैं, उसे वायुमंडल से हटाने के लिए क्या प्रयास करने होंगे।

सबसे पहले तो उन्होंने यह गणना की कि यदि आप हवा को इस ढंग से छानना चाहते हैं तो आपको करीब 75,000 गिगाटन हवा छाननी होगी। हवा छानने के इस प्रयास में प्रति वर्ष 180 गिगाटन पानी लगेगा, जो 5.3 करोड़ लोगों को पानी से वंचित करके प्राप्त किया जाएगा। वैसे भी वर्ष 2025 तक दुनिया की 66 प्रतिशत आबादी पानी के अभाव से त्रस्त होगी। उक्त 5 करोड़ लोग उसके अतिरिक्त होंगे।

चट्टानों के अपरदन को तेज़ करना भी कोई आसान विकल्प नहीं है। इसके लिए आपको 100 गिगाटन ओलिविन की ज़रूरत पड़ेगी। ओलिविन एक आम खनिज पदार्थ है जो पृथ्वी की सतह से थोड़ा नीचे पाया जाता है और मेग्नीशियम व लौह के लवणों से बना होता है।100 गिगाटन ओलिविन का मतलब है दुनिया में कुल वर्तमान उत्पादन से साढ़े बारह हज़ार गुना ज़्यादा। 30 गिगाटन कार्बन डाईऑक्साइड को सोखने के लिए इसकी 1 से.मी. मोटी परत 3.6 अरब वर्ग किलोमीटर शुष्क क्षेत्र पर बिछानी होगी। इतनी ज़मीन आपके पास है नहीं।

लंदन में आयोजित प्लेनेट अंडर प्रेशर सम्मेलन में एक्सॉन और लुबेंस्की ने बताया कि कार्बन डाईऑक्साइड को हटाने के लिए जो उद्योग बनेगा वह मौजूदा उद्योग से 100 गुना विशाल होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***